Special Issue January 2020

VIDYAWARTA®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

साहित्य और समाज चिंतन

Scanned with CamScanner

Editorial Board & review Committee

- **Chief Editor**

Dr Gholap Bapu Ganpat
Parli_Vaijnath,Dist. Beed Pin-431515 (Maharashtra)
9850203295, 7588057695
vidyawarta@gmail.com

- **M.Saleem**

saien Ghulam street
Fatehgarh Sialkot city
Pakistan. Phone Nr. 0092 3007134022
saleem.1938@hotmail.com

- **Dr. Momin Mujtaba**

Faculty Member,Dept. of Business Admin.
Prince Salman Bin AbdulAziz University
Ministry of Higher Education,Kingdom of Saudi Arabia, Tel No.: +966-17862370 Extn: 1122

- **N.Nagendrakumar**

115/478, Campus road,
Konesapuri, Nilaveli (Postal code-31010),
Trincomalee, Sri Lanka
nagendrakumarn@esn.ac.lk

- **Dr. Vikas Sudam Padalkar**

vikaspadalkar@gmail.com
Cell. +91 98908 13228 (India),
+ 81 90969 83228 (Japan)

- **Dr. Wankhede Umakant**

Navgan College, Parli –v Dist. Beed
Pin 431126 Maharashtra
Mobi.9421336952
umakantwankhede@rediffmail.com

- **Dr. Basantani Vinita**

B-2/8, Sukhwani Paradise,
Behind Hotel Ganesh, Pimpri,
Pune-17 Cell: 09405429484,

- **Dr. Bharat Upadhya**

Post.Warnanagar, Tq.Panhala,
Dist.Kolhapur-4316113
Mobi.7588266926

- **Jubraj Khamari**

AT/PO - Sarkanda, P.S./Block - Sohela
Via/Dist. - Bargarh, Pin - 768028 (Orissa)
Mob. No. – 09827983437
jubrajkhamari@gmail.com

- **Krupa Sophia Livingston**

289/55, Vasanthapuram,
ICMC, Chinna Thirupathy Post,
Salem- 636008 +919655554464
davidswbts@gmail.com

- **Dr. Wagh Anand**

Dept. Of Lifelong Learning and Extension
Dr B A M U Aurangabad pin 431004
Mobi. 9545778985
wagh.anand915@gmail.com

- **Dr. Ambhore Shankar**

Jalna,Maharashtra
shankar296@gmail.com
Mobi.9422215556

- **Dr. Ashish Kumar**

A-2/157, Sector-3, Rohini, Delhi -110085
Ph.no: 09811055359

- **Prof. Surwade Yogesh**

Dept. Of Library, Dr B A M U Aurangabad , Pin 431004
Cell No: +919860768499
yogeshps85@gmail.com

- **Dr.Deepak Vishwasrao Patil,**

At.Post.Saundhane, Near
Kalavishwa Computer, Tq.Dist.Dhule-424002.
Mobi. 9923811609
patildipak22583@gmail.com

- **Dr.Vidhya.M.Patwari**

Vanshree Nagar,Behind Hotel
Dawat, Mantha Road, Jalna-431203
Mobi.9422479302
patwarivm@rediffmail.com

- **Dr.Varma Anju**

Assistant Professor, Dept. of Education,
Sikkim University 6th Mile, Samdur Tadong-737102
GANGTOK - Sikkim, (M.8001605914)
anjuverma2009@rediffmail.com

- **Dr.Pramod Bhagwan Padwal**

Associate Professor,Department of Marathi
Banaras Hindu University,
Varanasi-221005.(Uttar Pradesh)
Mobi. 9450533466
pbpadwal@gmail.com

Scanned with CamScanner

36) तुलसीदासकृत 'रामचरितमानस' की कालसापेक्षता
डॉ. साळुंखे मनिषा नामदेव, कुर्डुवाडी ||109

37) मुस्लिम जन-जीवन का धर्म पर अटूट विश्वास: नजमा उपन्यास के संदर्भ में
डॉ. खुद्दुस पाटील, विजयपुर ||111

38) नई सदी के प्रथम दशक के 'खानाबदोश ख्वाहिशें' उपन्यास में सामाजिक समस्याएँ
डॉ. नारायण गुरूसिध्द बगली, विजयपुर ||113

39) बाँसुरी बजती रहे: नाटक एक अमर प्रेम गाथा नाटक का स्वरूप, परिभाषा, एंव तत्व-
प्रा. डॉ. संजय मुजमुले, पंढरपुर ||114

40) सूर्यबाला के कहानियों में सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण
डॉ. बापुराव विठ्ठल पाटील, विजयपुर ||116

41) नई सदी के प्रथम दशक के 'बरखा रचाई' उपन्यास में सामाजिक समस्याएँ
विद्या हंचाटे, विजयपुर ||118

42) डॉ. बालशौरी रेड्डी जी के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक जीवन
प्रा. गंगाधर म. गेंड, विजयपुर ||119

43) नई सदी के प्रथम दशक के 'आखेट' उपन्यास में सामाजिक समस्याएँ
टी. माधवी, बेंगलोर ||122

44) हिंदी के महिला उपन्यासकार के उपन्यासों में चित्रित स्त्री विमर्श
डॉ. विनय चौधरी, उस्मानाबाद (तुळजापुर) ||123

45) 'कमलेश्वर' की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय समाज
प्रा. नवनाथ जगताप, डॉ. अनिल प्रभाकर कांबळे, सोलापुर (मंगलवेढ़ा) ||126

46) 'चन्द्रकिरण सौनरिक्सा' की आत्मकथा 'पिंजरे की मैना' में चित्रित नारी जीवन
प्रा. डॉ. अनिल प्रभाकर कांबळे, सोलापुर (मंगलवेढ़ा) ||130

47) हैलो कामरेड' नाटक में दलित संघर्ष
श्री. किसन भानुदास वाघमोडे, सोलापुर (मालशिरस) ||131

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

घटना के बारे में समाचार पत्रों में न छापने के लिए फोन करता है ताकि समाज में उसका इमेज खराब न हो जाए, लेकिन साजिद ऐसा काम नहीं करना चाहता।

सामाजिक समस्याओं में आज एक मुख्य समस्या गरीबी और भ्रष्टाचार भी है। लेखक के शब्दों में- "यहाँ की मुख्य समस्यायें क्या है? गरीबी, गरीबी और गरीबी। क्योंकि रोजगार नहीं है। भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचार। क्योंकि भ्रष्टाचार शक्तिशाली लोग करते हैं और उन पर कोई उंगली नहीं उठा सकता।"

समाज की उन्नति और विकास के लिए मानव के मन, मस्तिष्क की विकसित विचारधारा को ही आवश्यक मानते हुए साजिद अली कहता है- "पैसे से डेवलपमेंट नहीं होता। मतलब नालियाँ बना देना, हैंडपंप लगा देना, कर्ज दे देना, खुशहाली की गारंटी नहीं है।...मैंने कहा, लोगों को बदलना, लोगों को जागरूक बनाना, उनके अंदर बदलाव की चेतना पैदा करना, उनके अंदर संगठन और संयोजन की शक्तियों का विकास करना, उन्हें सामूहिकता से जोड़ना...ये विकास है-यानी विकास की पहली शर्त है।" समाज में व्यक्ति का विकास अपने सामाजिक समस्याओं से मुक्ति पाने के बाद ही होता है। व्यक्ति की समस्या पूरे समाज की समस्या हो जाती है।

❑❑❑

42

डॉ. बालशौरी रेड्डी जी के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक जीवन

प्रा. गंगाधर म. गेंड
एस. बी. कला एवं के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह अपने मानवीय गुणों को बनाए रखने के लिए एवं अपनी आवश्यकताओं की आपूर्ति कर लेने के लिए अपने अडोस-पड़ोस के लोगों के साथ सामाजिक संबंध स्थापित कर लेता है। वस्तुतः उसकी इसी भावना के कारण व्यक्ति सामाजिक प्राणी कहलाता है। लोगों के इन्हीं आपसी संबंधों का सम्मिलित रूप ही मुख्यतः सामाजिक जीवन कहलाता है। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न सामाजिक संबंध स्थापित करके अनेक प्रकार के कार्य करता है। मनुष्य अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए समाज के अन्य मनुष्यों से पारस्परिक सहयोग प्राप्त करके सामाजिक कार्य में जुट जाते हैं। सामाजिक प्रक्रिया, सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण अंग है। समाज मनुष्य के उन्मुख व्यवहार को नियंत्रित करता है वह अपने में स्थित अनेक प्रकार की परंपराओं, रीति-रिवाजों एवं लोक विश्वासों के माध्यम से व्यक्ति को सुपथ पर लाता है। इसीलिए आदमी सामाजिक नियंत्रण में रहकर उसके नियमों के अनुसार चलकर अपने व्यक्तित्व का विकास करता है और देश का एक जिम्मेदार नागरिक बन जाता है। भारतीय समाज वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित समाज है। इसलिए विभिन्नताओं के होते हुए भी इसमें मौलिक राष्ट्रीय एकता बनी हुई है। इसी एकता के कारण ही विश्व में भारतवर्ष का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

किसी भी प्रांत या देश के सामाजिक जीवन का रूप वहाँ की सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था पर ही आधारित होता है। आर्थिक विकास ही सामाजिक प्रगति लिए नई चेतना देता है। भारतीय समाज की प्राथमिक इकाई है परिवार। परिवार के संरक्षण में ही यहाँ के व्यक्ति सामाजिक जीवन को निर्वाह करते हैं।

जिस प्रकार हिंदी के अन्य सामाजिक उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों माध्यम से विभिन्न सामाजिक समस्याओं का

Scanned with CamScanner

चित्रण किया है. उसी प्रकार अहिंदी भाषी हिंदी उपन्यासकार श्री. बालशौरि रेड्डी जी ने भी अपने सभी सामाजिक उपन्यासों में आंध्र प्रदेश के सामाजिक जीवन का सशक्त चित्रण किया है। उन्होंने स्त्री-पुरुषों का व्यभिचार, दिखावापन, आदिवासी जीवन छुआछूत की समस्या, नारी की पवित्रता की समस्या, धार्मिक रूढियों, बहु-विवाह, विधवा विवाह, अनमेल विवाह, संयुक्त परिवार प्रथाओं, अशिक्षा, विवाह पूर्व प्रेम, पारिवारिक कलह, स्वच्छ जल की समस्या, भोजन की समस्या, संपत्ति का लोभ, शैक्षणिक समस्याओं में भाई भतीजावाद, सामाजिक विरोधी तत्वों का प्रचार, जुआ खेलना, कुँवारी माँ की समस्या, बाल्य विवाह, अंधविश्वासों आदि सामाजिक समस्याओं से सशक्त चित्रण अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया है।

शबरी उपन्यास के माध्यम से लेखक ने आंध्र के आदिवासी शबर लोगों के सामाजिक सुधार का यथार्थ चित्रण किया है। जाति-पाँति, मानव-मानव में भेदभाव, शुचि-शुभ्रता, अस्पृश्यता निवारण, अहिंसा, लोकतंत्र की भावना, नारी जागरण आदि सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत कर उनका समाधान भी लेखक ने उपस्थित किया है।

शबरी के झूठे बेरों को भगवान श्री रामचंद्र द्वारा खाये जाने की बात उठा कर लेखक ने जाति-पाँति, उच्च-नीच रूपी सामाजिक विषमता को दूर करने का प्रयास किया है। जब शबरी ऋषिवाटिका के मुनि कुमार करूण से खुलकर बात करती है तो, शबर लोग उसके चरित्र पर शंका व्यक्त करते हैं, जिससे कुपित होकर शबरी अपने पिता से कहती है कि-"क्या एक युवती खा एक युवक के साथ बात करना पाप है? भाई-बहन से बात करता है, क्या वह पाप है, दुनिया की आँखे यह सहन नहीं कर सकती कि एक दूसरे के अनुभव और ज्ञान से लोग लाभ उठाएँ। परस्पर पवित्र मिलन को भी अनुचित ठहरा कर लोगों का पमान करना उसे पसंद नहीं है।"[2]

'जिंदगी की राह' उपन्यास मूल रूप से मध्यमवर्गीय भारतीय हिंदू समाज की वैवाहिक समस्याओं के आधार पर लिखा गया है। सुशील एवं समझदार लडकी सुहासिनी को जीने की राह सरल और सीधी है तो आधुनिकता एवं भावुकता को महत्व देनेवाली सरला की राह दुर्गम और टेढी-मेढी है। सुहासिनी जीवन की अच्छाई एवं बुराइयों पर सोचकर कदम बढाती है तो सरला जल्दबाजी और भावुकता वश गलत कार्य कर बैठती है। लेखक इस उपन्यास की सरला द्वारा अपने पाठकों को यह सीख देना चाहते हैं कि स्त्री के लिए सहनशीलता की ही आवश्यकता है।

सरला स्नान करने के लिए पिछवाडे में गई। लेकिन वहाँ स्नानागार को न पाकर फूफी से पूछने लगी तो वह कहती है कि-"बेटी, देहात में शहर की भाँति अलग स्नानागार नहीं होते। चारपाई वहाँ खडी कर दी गई है। उस पर साडी डाल दो। वहीं बाल्टी में गरम पानी रखा हुआ है। चारपाई की आड में नहाओ।"[3] इस संदर्भ से पाठकों को पता चलता है कि आंध्र ग्रामों में दैनिक उपयोगी वस्तुओं का अभाव एवं अनेक प्रकार की सुविधाएँ हैं। फिर भी वहाँ के लोग उन सब के लिए आदि हो गए हैं। वस्तुत: पिछडे हुए इन ग्रामों को सुधारने की तथा वहाँ के लोगों के सामाजिक जीवन स्तर को बढाने की महती आवश्यकता है।

'ये बस्ती ये लोग' उपन्यास का नायक गोविंद निम्न वर्गीय परिवार की गरीब, चंचल, अशिक्षित, अनाडी, स्वाभिमानी और साहसी गँवारू व्यक्ति है। यह गाँव से मद्रास महानगर नौकरी की तलाश में जाता है। किंतु वह महानगर में होनेवाली सामाजिक कुरितियों दुराचारों को देखर उन्हें सह नहीं सकता। अत: महानगरीय जीवन से ऊबकर वह ग्रामीण जीवन बिताने के लिए पुन: बाध्य हो जाता है। बालशौरि रेड्डी जी ने गोइंद के माध्यम से मद्रास नगर के सामाजिक जीवन में व्याप्त कुरितियाँ जैसे मिठाई में मिलावट, बहु विवाह, व्यभिचार, समाज सेवा समिति के सदस्योंद्वारा समिति क धन का दुरुपयोग, बलात्कार, मजदूरों का शोषण आदि का चित्रण कर ऐसी परिस्थितियों से महनगरीय जीवन को चित्रित किया है।

घर से भाग कर आधी रात के समय सरोजा अपने सारे रिश्तेदारों के घर आश्रय के लिए जाती है। किंतु कहीं भी आश्रय न मिलने के कारण उसे अपनी सहेली के घर जाना पडता है। अपनी सहेली की सहायता से वह समाज सेवा समिति में नौकरी प्राप्त कर लेती है। यहाँ से समिति की ओर से मजदूरों की बस्ती में प्रौढ शिक्षा एवं समाज सेवा का काम सौंपा जाता है। अपने इस कार्य के संदर्भ में वह मजदूरों की बस्ती में नारीकी जो दयनीय स्थिति है उससे परिचित होती है। एक व्यक्ति दिन भर की कमाई से शराब पीकर प्रौढ शिक्षा केंद्र में पढने के लिए आयी हुई अपनी पत्नी को पैसों के लिए पशु के समान पीटता है। सरोजा एवं गोविंद के प्रयास से अपने पति के अत्याचार से दबी वह अपनीस्थिति को उन्हें अवगत करवाते हुए कहती है कि "यही टंटा है, माई। मैं चार बच्चे उससे परेशान हैं। वह एक नया पसा भी घर नहीं लाता। रोज मजदूरी की पैसे शराब पीने में फूँक देता है। शाम को गिरते पडते खाली हाथ घर लौटता है। इधर-उधर बरतन माँजने का काम करके मैं जो कुछ लाती हूँ उसी से हमारा गुजारा होता है। हमारा पालन तो नहीं करता, लेकिन उल्टे पैसे माँगता है। न देने पर

Scanned with CamScanner

पीटता है, लात मारता है। मैं कहाँ से लाऊँ, माई जी? जो लाती हूँ खाने को भी काफी नहीं होता। हमारे दिन इसी तरह दु:ख में कटते है। कभी-कभी आधा पेट खाते हैं और कभी-कभी फाका रहते हैं।"[३]

'बैरिस्टर' उपन्यास के माध्यम से निस्वार्थ एवं आनंद दायक ग्रामीण जीवन का चित्रण एक ओर लिया है दूसरी ओर भारतीय जीवन परंपरा को छोडकर पाश्चात्य जीवन परंपरा के व्यामोह में घुटन एवं निराशा से पूर्ण दु:खदायक जीवन बिताने वाले शिक्षित शहरी लोगों के जीवन का भी यथार्थ चित्रण किया है।

इस उपन्यास का नायक सुधाकर है। वह विलायत में बैरिस्टरी करके अपने गाँव कोत्तपल्ली में आता है। तब ग्रामीण रिति-रिवाजों के अनुसार डोलक, कुंडाल, शहनाई काहली आदि मंगलवाद्य के साथ उसका भव्य स्वागत किया जाता है। एक आलंकृत बैलगाडी पर बिठाकर उसका जुलूस निकाला जाता है। बाद में उसका विवाह गुडूर गाँव में प्रतिष्ठित व्यक्ति महेंद्र बाबू की एकलौती पुत्री अनसूया से हो जाता है। वस्तुत: सुधाकर इस विवाह के अनुकूल नही था। किंतु पारिवारिक दबाव के आगे वह झुक जाता है।

सुधाकर के ससुर महेंद्र बाबू के माध्यम से लेखक ने ग्रामीण पंचायत व्यवस्था का यथार्थ चित्रण किया है। महेंद्र बाबू के फैसले से प्राय: पेशेवरवकील एवं जज भी चकित रह जाते थे- "बडे-बडे वकील और जज भी उनके फैसलों की कहानियाँ सुन-सुनकर चकित हो जाते थे। कभी-कभी वे लोग सोचते थे कि महेंद्र बाबू जैसे लोग हर तालुकों में रहे और अदालतों का आश्रय न लेकर लोग उसके पास जाएँ तो वकालत और जजोई के पेशेवर लोगों का खाना भी छिन जाए। लेखक ने अपने इस उपन्यास द्वारा एक ओर तो ग्रामीनो के अभावी को दर्शाया तो दूसरी ओर वहाँ के अल्पसंख्यक में रहनेवाले प्रतिष्ठित परिवारों के जीवन का चित्रित किया है।

'प्रोफेसर' इस उपन्यास का नायक आनंद है। वह मद्रास विश्वविद्यालय में रीडर के रूप में कार्यरत है। एम.ए. तक पढी हुई सुशिक्षित सौंदर्य संपन्न अहंकारी नारी सुधा आनंद की पत्नी है। लेखक ने सुधा के माध्यम से नारी के सहज स्वभाव का चित्रण अत्यंत सुंदर ढंग से किया है।

हिंदू संप्रदाय के अनुसार आनंद और सुधा पति-पत्नी तो हुए किंतु दोनों के विचारों में जमीन आसमान का अंतर है। अत: आनंद बार-बार यह सोचता कि अपने विचारों से मेल खाने वाली पत्नी मिलती तो कितना अच्छा होता? वह खरा अपने भाग्य पर दु:खी होता रहता है। सुधा अपने पति को प्रोफेसर बनाकर विलायत जाने की उच्चाकांक्षाओं से तडपती रहती है। वह अक्सर सोचती है कि पुरूष वर्ग इज्ज्जत स्त्री की मुठ्ठी में होती है। अत: वह अपने पति को अपने अनुकूल बनाने का हर संभव प्रयास करती है। परंतु पति-पत्नी दोनों के हठीले स्वभाव के कारण उनके दांपत्य जीवन संबंधों मे दरार आ जाती है। हर रोज सुधा और आनंद की बाटचीत प्रेम से न होकर प्राय: कलह से आरंभ होता है। अंत में जाकर वह समझौते में बदल जाती है। लेखक ने सुधा की माध्यम से स्वाभिमानिनी एवं पति से अपने अधिकारों के लिए लडनेवाली नारी का यथार्थ चित्रण किया है।

आनंद अपने कार्य से अधिक स्वस्थ्य रहकर घर के सदस्यों के प्रति अपने कर्तव्य को भूल जाता है। अत: सुधा अपने पति को अक्सर आक्रोश भरी भातें सुनाती थी। आनंद का विश्वविद्यालय से विलंब से घर आना एवं घर में पत्नी के लिए थोडा समय न देकर शोधार्थियों के शोधकार्य के परामर्श में डूबे रहना आदि से क्रोधित वह कहती है कि-"तुम्हारे इन कामों से मेरा कोई मतलब नहीं। मैं इतना ही कहूंगी, मेरे लिए भी थोडा सा समय निकालो। जब देखो, घर पर विद्यार्थी जमे रहते हैं, उन्ही से बात करते हो, उन्ही को सुअनते हो, आनो हम कुछ है ही नहीं। मैं पूछती हूँ, इन सब को घर पर क्यों बुलाते हो। कल से कह दोवे घर पर न आये।"[४]

पति से अपना अक माँगती हुई सुधा कहती है कि-मैं अपना हक माँगती हूँ। मुझे भी अपने पति के साथ घूमने, टहलने और बोलने का शौक होता है। मैं कोई अशिक्षित और गँवार युवती नहीं हूँ कि दिन भर रसोई के कोने में पडी रहूँ।"[५] इसमें एक ओर नारी के स्वाभिमान एवं उच्चाकांक्षाओं के कारण हुए पारिवारिक विघटन को स्पष्ट किया गया है तो दूसरी ओर अपने कर्तव्यों कोभूले हुए पतियों को सही मार्ग लाने का प्रयत्न किया गया है।

संदर्भ

१. बालशौरि रेड्डी, शबरी, पृ. ५९
२. बालशौरि रेड्डी, जिंदगी की राह, पृ. ७३
३. बालशौरि रेड्डी, ये बस्ती: ये लोग , पृ. ८२-८३
४. बालशौरि रेड्डी, प्रोफेसर, पृ. ४१
५. बालशौरि रेड्डी, प्रोफेसर, पृ. ४१

❑❑❑

Scanned with CamScanner